आंतर भारती

हिन्दी मासिक पत्रिका

''आंतर भारती'' स्वप्नद्रष्टा
साने गुरुजी

संस्थाध्यक्ष
ॲड.आनंदमोहन माथुर

प्रेरक, संवर्द्धक-संपादक
स्व.यदुनाथ थत्ते

प्रबंसंपादन कार्यालय
आंतर भारती
साने गुरुजी मार्ग,
औराद शहाजानी -413 522 (महा.)
ईमेल - antarbharati.patrika@gmail.com

संपादन कार्यालय
द्वारा, डॉ.सी.जय शंकर बाबु
सहायक प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग, पांडीच्चेरी - विश्वविद्यालय, कालापेट, पुदुच्चेरी - 605014
ईमेल - editor.antarbharati@gmail.com

आंतर भारती, साने गुरुजी का एक स्वप्न जो असीम युवा शक्ति की सृजनात्मक उपयोगिता हेतु समर्पित, युवाओं की सम्भाव्यता, प्रवीणता, प्रेरणा व विश्वास के नए आयाम प्रदान करती है.

मुख्यसंपादक
प्राचार्य सदाविजय आर्य
09823156777

visit us : antarbharati.org.in

कार्यकारी संपादक
डॉ.सी.जयशंकर बाबु
09843508506

सपादक
डॉ.विजया वारद • ज्योतिराव लढ़के

मार्गदर्शक
एस.एन.सुब्बराव • पांडुरंग नाडकर्णी • मुरलीधर शहा

सहयोगी
मधुश्री आर्य
छायाचित्र : अनिकेत आमटे

प्रकाशित सामग्री से प्रकाशक / संपादक सहमत ही हैं ऐसा न मानें

ANTAR BHARATI : A dream of Sane Guruji committed to the constructive utilization of boundless Youth Power, gives new dimensions to the Potentiality, Skill, Inspiration & Belief of the youth.

आंतर भारती (मासिक) पत्रिका मुद्रक, प्रकाशक सदाविजय आर्य द्वारा **साईराम ग्राफीक्स,** लातूर से गणेश ऑफसेट, उदगीर हेतु मुद्रित कर आंतर भारती संकुल, औराद शहाजानी से प्रकाशित.

इस अंक में ...

संपादकीय			05
आन्तर भारती	- 1 -	तुका म्हणे	08
आन्तर भारती	- 2 -	बसव वचन	09
आन्तर भारती	- 2 -	तिरुवल्लुवर	10
विशेष आलेख	- 1 -	संघर्ष की दमदार मिसाल	11
विशेष आलेख	- 2 -	नया जग	13
धुनी तरुणाई	-	स्पर्श मणिस्पर्श	15
चिंतन भारती	- 1 -	सभी समस्याओं	19
चिंतन भारती	- 2 -	जलाओ दिये	23
समाचार भारती	- 1 -	युवा संगठनों	25
विशेष आलेख	- 3 -	प्रबोधन की पगदंडी	26
समाचार भारती	- 1 -	साने गुरुजी	29
समाचार भारती	- 3 -	राष्ट्रीय युवा	31

दीर्घायु शुभेच्छा

हमारे विश्वस्त तथा राष्ट्रीय युवा योजना के संस्थापक / संचालक डॉ.भाईश्री एस.एन.सुब्बाराव आयु के 7 फरवरी 2015 को 89 वर्ष पूरे कर रहे हैं। आंतर भारती परिवार, उनकी दीर्घायु की शुभकामना करता है।

संपादकिय...

ई-शासन सुशासन कैसे हो सकता है ?

मैं कहना चाहूँगा – 'मशीन मे मनुष्य के अवगुण जब तक नहीं प्रवेश करते हैं, वह एक सफल कार्यकर्ता के रूप में अपनी भूमिका निभा सकती है ।' कंप्यूटर एवं इंटर्नेट आधारित संचार व्यवस्था के माध्यम से ई-शासन की संकल्पना की सफलता भी इसी वक्तव्य के दायरे में हम हतर ढ़ंग से समझ सकते हैं । मानव समाज में मान्य अनेक जीवन मूल्य हैं, उनसे मशीन का लेना-देना नहीं हैं । मगर हमारे तथाकथित जीवन-मूल्यों में कई मूल्यों का सही मायने में मशीन भी प्रतिनिधित्व कर सकती है, बशर्ते कि हम उसे छेड़-छाड़ न करें । सत्य, समानता, अनुशासन, समय बद्धता, कार्यनिष्ठा आदि मूल्य जो मनुष्य समाज के लिए मायने रखते हैं, वे सब ई-शासन में भी संभव है, क्योंकि ये सब गुण मशीन के साथ सहजतः जुड़े हुए हैं । मशीन इन्हीं गुणों के साथ जीवंत और कार्यबद्ध रहते हुए ई-शासन को सफल बना सकती है । हम अपनी नीतियों के बहाने इन्हें नियंत्रित कर अपने-अपने स्वार्थो के अनुरूप गठित करना चाहते हैं और उस रुप में हम अपनी कुटिल नितियों के अनुकूलन के लिए इन मशीनी-व्यवस्थाओं की छेड़-छाड़ करेंगे, तो वे मनुष्य के अवगुणों के अनुरूप व्यवहार अपनाते नज़र आएंगी ।

आज हम ई-शासन की ओर तेज़ दौड़ लगाते हुए यह ढींग हांकना चाह रहे हैं कि पारदर्शी और त्वरीत शासन जनता को सुलभ कराया जाएगा । जब तक शासक और अधिकारी-वर्ग में ईमानदारी नहीं होगी, कोई भी व्यवस्था कारगर ढ़ंग से सफल नहीं हो सकती है । इस संदर्भ में शासितों की निष्ठा और चेतना भी कम मायने नहीं रखता । ई-शासन के संबंध में संबंधित पक्षों व कर्णधारों में अपेक्षित चेतना की ओर इंगित करने की कोशिश में, यह स्पष्ट करना चाहता हूँ की ई-शासन की भी ऐसी कई सीमाएँ हैं । ई-अधिशासन का एक विराट स्वरूप बनाकर हम जनसेवाओं के लिए एक कारगर व्यवस्था कायम कर सकते हैं । मगर ऐसी व्यवस्था से अपेक्षित परिणाम प्राप्त करने के लिए सबसे पहले हमें अपने रवैये बदलने होंगे । भ्रष्टता को कम करना, समयबद्ध सेवाएं उपलब्ध करना ई-अधिशासन से संभव है, मगर इसके लिए हमारी प्रतिबद्धता जरुरी है । मानसिक रूप से जब हम अपने शाश्वत जीवन-मूल्यों की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध नहीं रहेंगे, तब तक ई-शासन भी एक कोरी परिकल्पनात्मक व्यवस्था ही साबित हो सकती है । एक छोटा-सा उदाहरण हम लेंगे । रेलवे में ई-शासन को लेकर एक सामान्य अनुशीलन हम करेंगे । मुख्यतः रेल यात्रा के लिए आरक्षित व अनरक्षित टिकटों के वितरण की व्यवस्था को हम देखें तो कई बिंदु में मिल जाएंगे, जिनमें रेलवे प्रबंधन की ग़लत व

अपारदर्शी नीतियों की वजह से ई-शासन द्वारा अपेक्षित नैतिक परिणाम जनता को देने में वह पूर्णतः सफल नहीं हो पा रही है ।

लंबी यात्रा के बीच कुछ समय रूक कर आगे की यात्रा तय करने के मामलों में आरक्षित टिकट रेलवे के काउंटरो में जिस रियायती मूल्य (टेलिस्कोपिक रेट योजना के तहत) पर बना सकते हैं, रेलवे इंटर्नेट पोर्टल के माध्यम से उस मूल्य पर खरीद की आज तक कोई व्यवस्था नहीं की गई है । ऑनलाईन टिकट खरीदने वाले उपभोक्ता शुरू से टेलिस्कोपिक रेट की सुविधा से वंचित हैं । आरक्षण काउंटरों में टिकट 'उपलब्धता' की स्थिति में भी 'अनुपलब्धता' (प्रतीक्षा-सूची) की स्थिति कृत्रिम रूप से पैदा करने की साजिश भी अकसर रेल कर्मी (कुछ समय के लिए) रचत रहते हैं, इस धोखेबाज़ी में ई-व्यवस्था पर हम कोई दोष नहीं लगा सकते हैं, ये ही ई-व्यवस्था में मनुष्य के अवगुण जोड़ने के कुछ उदाहरण हैं । (सॉफ्टवेयर से छेड़-छाड़, सर्वर पर हमला, हैकिंग आदि जैसे अलग अपराध तो है हीं..., उन्हें इस दायरे मे चचर्चा करने की जरूरत नहीं है।) तत्काल आरक्षण तो रेलवे प्रबंधन द्वारा किसी समय संकल्पित एक जुआ का खेल जैसा है, इस खत्म करने की दिशा में बदलती सरकारों का ध्यान नहीं जा रहा है । यह मात्र मुनाफाखोरी का खेल है, इसमं यात्रियों को सुविधा देने की निष्ठा नहीं है । कुछ गाडियों में तो आरक्षण के लिए निर्धारित कई सुविधाएँ (शायिकाएं व सीटें) खाली भी रह जाती हैं जबकि अनारक्षित डिब्बों में थोड़ी-सी जगह में कई लोग तड़पते मरते सफर करते हैं, यह साधारण या तथाकथित दूसरी श्रेणी में साधारण जन की दूसरी बड़ी विडंबना है । नीतिगत अपरदर्शिता, अवगुणों का ई-शासन को प्रभावित करने का यह एक लघुत्तम उदाहरण है । एक संपादकीय लेख में रेलवे आरक्षण व्यवस्था के समस्त अवगुणों का लेखा-जोखा प्रस्तुत करने की कई सीमाएँ हैं और इस संपादकीय का आशय भी यह नहीं है कि वह रेलवे आरक्षण प्रणाली की टीका-टिप्पनी करे । प्रबंधन व कर्मचारी पक्ष के अवगुण ई-शासन को किस ढ़ंग से प्रभावित करते हैं, यहाँ संकेत देना ही इसका आशय है । रेलवे के ई-शासन का आशय पारदर्शों सेवाओं के माध्यम से यात्रियों को सुखद एवं सुरक्षित यात्रा का अवसर देने का हैं, मगर वह ग़लत नीतियों व व्यवस्था के साथ छेड़-छाड़ से भी प्रभावित हो रहा है । ई-शासन की ऐसी कई सीमाएँ हैं । ई-शासन के माध्यम से भ्रष्टाचार को कम करने के लिए नीतियों को सही रूप में परिभाषित करने की, और पूरी निष्ठा से कदम उठाने की जरूरत है । अन्यथा यह एक कोरी कल्पना ही होगी कि ई-शासन से हम भ्रष्टाचार को कम कर सकते हैं और पारदर्शी शासन उपलब्ध करा सकते हैं ।

भारत के संदर्भ में ई-शासन में ईमानदारी बढाने के लिए उसे भारतीय

भाषाओं में काम करने की सुविधा भी देने की ज़रूरत हैं, अन्यथा यह अंग्रेजी को थोपने वाली व्यवस्था साबित हो सकती है । किसी भी क्षेत्र में ई-शासन की शुरूआत में ी उसके साथ ीारतीय भाषाओं की सुविधाएँ जुड़नी चाहिए, अन्यथा भविष्य में सॉफ्टवेयर बदलना भी एक बड़ा भ्रष्टाचार का रास्ता बन सकता है । ई-शासन के माध्यम से आधुनिक सुरक्षा एवं निगरानी की संकल्पना के अंतर्गत सी.सी.टी.वी. व्यवस्था की तरफ लालायित हमारे शासक इसमें कितनी ईमानदारी दिखा रहे हैं, यह दिल्ली के उच्च न्यायालय के इस वक्तव्य (देखिए, दि न्यू इंडियन एक्सप्रेस, दि.17जनवरी, 2015, पृ. 9) से स्पष्ट है कि अमरीकी राष्ट्रपति के आगमन के अवसर पर पंद्रह हजार सी.सी.टी.वी.युद्ध गति से लगाए गए हैं, जबकि दिल्ली सामूहिक बलात्कार के बाद निर्भय योजना नीतियों के तहत अदालतों के सुझाओं के बावजूद त्वरित गति से सी.सी.टी.वी व्यवस्था लागू करने में कोई उल्लेखनीय कार्रवाई नहीं हुई थी । ई-शासन तब तक कारगर नहीं हो पाएगा जब तक कि हमारी नीतियों में पारदर्शिता और ईमानदारी नहीं है । इस सत्य को ध्यान में रखते हुए कारगर और इमानदारी ई-शासन की दिशा में शीघ्रातिशीघ्र आगे बढे, उसी जनहित है । ई-शासन को तथाकथित सुशासन में तब्दील करने में भी सरकारों की पूरी निष्ठा और सरकारी अधिकारी वर्ग में तथा उन्हें लागू करनेवाले कार्यकर्ताओं में पूरी निष्ठा व ईमानदारी हो, तभी व्यापक जनहित संभव हैं ।

-डॉ.सी.जय शंकर बाबु

ग्राहकों से निवेदन

श्री बजरंग मुनिजी द्वारा संपादित / प्रकाशित पाक्षिक पत्रिका ज्ञानतत्त्व आन्तर भारती के आधिकांश ग्राहकों को निःशुल्क भेजी गई । पर पत्रिका पाकर भी कइयों ने उनके पत्र का उत्तर न देने पर ज्ञानतत्त्व भेजना उनके द्वारा बंद कर दिया गया है ।

फिर भी हमारे जो भी ग्राहक 'ज्ञान तत्त्व' पाक्षिक पाना चाहते हैं वे निम्न पते पर एक पोस्टकार्ड अपने पूरे पते सह भेजें तो उन्हें यह पाक्षिक निःशुल्क भी मिल सकेगा । कृपया ग्राहक गंभीरता से विचार करें और संपर्क करें ।

संपर्क :- श्री बजरंग मुनिजी
संपादक ज्ञान तत्त्व
बनारस चौक, अंबिकापुर - 497 001
जि.सरगुणा (छ.ग.)
प्रकाशक आंतर भारती

करविली तैसी केली कटकट

करविली तैसी केली कटकट । वांकडें कीं नीट देव जाणे ।।१।।
कोणाकारणें हें जालेंसे निर्माण । देवाचें कारण देव जाणे ।।२।।
तुका म्हणे मी या अभिमाना वेगळा । घालूनि गोपाळा भार असें ।।३।।

English Translation

I have followed directions
Karavili taisi keli katkat

I have followed directions, right or wrong, God alone knows.
God knows for whom or for what purpose he got it done.
Says TUKA, I put full faith in Lord Gopala
And do not claim any credit for myself.

English : D.S.VAJRAM
3, Praram Lakaki Rasta, Pune - 411 016

महात्मा बसवेश्वर वचन

–डॉ.इरेश स्वामी

कन्नड वचन

लोकद डोकं नीवेके तिद्दुविरि ?
निम्म निम्म तनुव संतैसिकोळ्ळि
निम्म निम्म मनव संतैसिकोळ्ळि
नेरेमनेयवर दुःखक्के अळुवर
मेच्च कूडलसंगमदेव

हिन्दी काव्यानुवाद

औरों की कमियाँ तुम क्यों गिनते हो ?
अपनी अपनी बात को सुधार लो
अपने मन को साफ सुथरा रखो. संतोष करलो.
पड़ोसियों की बुराइयाँ करनेवालों से
प्रसन्न नहीं होते कूडल संगमदेव !

सारांश :

सर्व सामान्यों की प्रवृत्ति औरों के दोष देखने की होती है । कोई अपनी कमियों को नहीं देखता । इसी की समीक्षा करते हुए महात्मा बसवेश्वरने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि इस तरह के लोगों को पसंद नहीं करते ईश्वर । कई दासों तथा संतों ने निंदकों की आलोचना की है । अपने दोषों को न देख मात्र औरों की मीन मेख निकालनेवालों को इस वचन से यह सीख लेनी चाहिए कि अपने आप को दोष मुक्त करना चाहिए । किसी को क्या अधिकार है कि दुसरों की बुराई करे ! कूडल संगम ऐसों से प्रसन्न नहीं होते यानी संसार मे ऐसों की कीमत नहीं होती ।

'विद्या' ब्रह्मचैतन्य नगर, सोलापूर- 413 004
0217-2342194, 9371099500

तिरुवल्लुवर वाणी

तिरुक्कुरल

तमिल मूल–संत तिरुवल्लुवर
देवनागरी लिप्यांतरण एवं हिंदी हायकु अनुवाद – डॉ.सी.जय शंकर बाबु
प्रथम खंड – अरत्तुपाल (धर्म खंड)
इल्लरवियल् (गृहस्थ–धर्म)
अध्याय 8. अन्बुडैमै (प्रेमभाव)

अन्बिरकुम् उण्डो अडैक्कुन्ताळ् आर्वलर्
पुन्कणनीर् पूशल् तरुम् । (कुरल – 71)
प्रेम का रोक ?
अश्रु–जल में भी
वह बेरोक

भावार्थ – प्रेम को रोकने वाला कोई ताला है ?
प्रिय का अश्रुजल ही उसके हृदयगत प्रेम का असीम संकेत है ।
अन्बिलार् एल्लात् तमक्कुरियर् अन्बुडैयार्
एन्बुम् उरियर् पिरर्कु । (कुरल – 72)
प्रेम को स्वार्थी
क्या जाने परार्थी
प्राण भी देते

भावार्थ – प्रेम न करनेवाले महज स्वार्थ के लिए ही (अपने लिए ही) जीते रहते हैं, जबकि प्रेम करनेवाले परार्थ के लिए (दूसरों के लिए) अपने प्राण भी देने तत्पर होते हैं ।

झारखंड में आदिवासियों के हक में आवाज बुलंद करने वाली दयामणी संघर्ष की जीवंत मिसाल है । तमाम मुश्किलों के बावजूद दयामणी ने पढ़ना नहीं छोड़ा । आगे चलकर पढ़ाई को निज उन्नति का सिर्फ स्त्रोत नहीं, बल्कि उसे लड़ाई का अस्त्र भी बनाया । अब वे नई पीढ़ी को हक हासिल करने की तरकीबों से लैस कर रही हैं ।

संघर्ष की दमदार मिसाल दयामणी नारी को राष्ट्र का आधार बनाने का कार्य दयामणी कर रही है

चाय नाश्ते की छोटी सी दुकान, पत्रकार, आंदोलनकारी मित्तल के खिलाफ लंबा संघर्ष, आदिवासी, मूलवासी, अमित्वरक्षा मंच यह कुछ टैग शब्द हैं, जिनकी मदद से कोई गूगल पर दयामणी बारला को तलाश सकता है । वैसे आदिवासी समाज से ताल्लुक रखने वाली दयामणी फेसबुक और टिव्टर पर कम और समाज के लिए चल रहे आन्दोलन की जमीन पर अधिक मिलती है । वह झारखंड में वंचित समाज के लिए चलने वाले सभी आन्दोलनों की सारथी है ।

दयामणी बारला बातचीत में बताती है कि जमीन और जंगल से उनके इतने लगाव की वजह क्या रही ? 'बचपन से जिस गांव में रहती, पली पढी, जिस पेड का फल खाया, जिस मिट्टी में खेले उससे लगाव होना स्वाभाविक है । उस जमीन को कोई हमसे छीनने तो कैसे दे सकते हैं' ? दयामणी के माता पिता अनपढ थे, उनका गांव झारखंड के गुमला जिले में हैं । गांव के दबंगों ने मां बाप से लड़ झगड़ कर उनकी जमीन छीन ली । न्याय की उम्मीद में माता पिता न्यायालय में गये लेकिन दंबगों ने न्यायालय की सीढ़ियों पर भी नहीं चढ़ने दिया । जमीन छीने जाने के बाद जो परिवार जमीन का मालिक हुआ करता था, अचानक दूसरी के घरों में नौकर बनने को मजबूर हो गया । जब वह चौथी कक्षा में पहुंची, तब तक पूरा परिवार नौकर बन चुका था । मां बाप और तीनों बडे भाइयों के साथ दयामणी दूसरों के खेतों घरों में मजदूरी करने लगी।

दयामणी कहती है 'जिन्दगी के उन बीते लम्हों ने सिखा दिया था कि जमीन और अपनी मिट्टी से अलग होना क्या होता है ? मैने जाना कि किसी हाथ

जमीन छिन जाये तो वह परिवार किस तरह बिखरता है' । उन्होंने अपनी पढ़ाई तमाम मुश्किलों के बावजूद नहीं छोड़ी । स्कूल की पढ़ाई के लिए वह रांची आ गई, स्कूल का खर्च निकालने के लिए वह स्कूल जाने से पहले और लौट कर आने के बाद सात घरों में झाडू पोंछे का काम करने लगी । इस तरह उन्होंने एम.कॉम किया ।

आज भी दंबगों की जो भूमिका उनके स्मरण में हैं, वह उन्हें लड़ने की ताकत देती है । जिस तरह दबंग लोगों ने धमका कर गांव के किसी व्यक्ति को भी दयामणी के परिवार के पक्ष में आने नहीं दिया, वही घटना उन्हें कमज़ोर के पक्ष में खड़ा रहने के लिए प्रेरित करती है । वे कहती हैं, 'इस जंगल को रहने लायक हमारे पूर्वजों ने बनाया हम धरती पुत्र-पुत्री हैं तो यहां सबसे अधिक ताक़तवर हम होंगे ना कि बाहर से आने वाला कोई । कभी कोई औद्योगिक घराना हमारे पास खनिज और वन संपदा लेने आ रहा है । फिर लेने आने वाला, देने वाले से बड़ा आदमी कैसे हुआ ?'

दयामणी मानती हैं कि उनकी लड़ाई जंगल जमीन की लड़ाई है । शुद्ध हवा पानी के अधिकार की लड़ाई है सच की लड़ाई है । दयामणी झारखंड के हजारों आदिवासी युवक-युवतियों के लिए प्रेरणा हैं, जिन्होंने उन्हें अपने अधिकार के लिए लड़ना सिखाया । जिन्होंने उन्हे बीरसा और सिद्धू-कान्हू की परम्परा की याद दिलाई। दयामणी को 2000 में ग्रामीण पत्रकारिता के लिए काउंटर मीड़िया अवार्ड मिला ।

2004 में नेशनल फाउंडेशन फॉर इंडिया की तरफ से उन्हें फैलोशिप मिली । इसी साल उनको एक आन्तरराष्ट्रीय संस्था कल्चरल सर्वाइवल की तरफ से एल लुट्स इंजीनियरिंग राइट्स अवार्ड मिला ।

-आशीष कुमार, अंशु

हेमलकसा : मित्र मिलन चित्रमय विवरण

पू.बाबा आमटे सुपुत्र श्री प्रकाश आमटे के कार्यक्षेत्र हेमलकसा (जि.गढचिरौली महाराष्ट्र) में पहली बार संपन्न हुए मित्र-मिलन समारोह की छायाचित्र में झांकियां फरवरी व मार्च 2015 के मुखपृष्ठों पर प्रकाशित ।

विशेष आलेख - 2

नया जग, नए प्रश्न, नए उत्तर

-अमर हबीब

हमारे पिताजी के बचपन में किसान मोठ लगाकर खेतों में पानी देते थे. उनके समय में मोटर आई. हमारे बचपन में सब किसान बैलों का हल चलाते थे. आजकल खेत जोतने के लिए बहुत से किसान ट्रॅक्टर का उपयोग करते है। कहीं कहीं अभी भी बैलों से जुताई होती दिखती है ऐसी कई बातें यहाँ दिखती हैं । हस्ताक्षर सुधारने के लिए हमें नरकल की कलम से लिखाते थे वह नरकल रहा नही । रात को पढ़ने के लिए हम मिट्टी के तेल की चिमनी प्रयोग में लाते थे । अब न तो वह चिमनी है न लालटेन। इस तरह सूचि करने बैठे तो अनेक बातें याद आएंगी। दूसरी तरह हमारे बचपन में नहीं थी । ऐसी कई बातें प्रतिदिन प्रयोग में आने लगी हैं । मोबाईल की हमने कल्पना तक नहीं की थी । अचानक वह आया और सब तरफ फैल गया घर के बाहर जाते समय हर व्यक्ति अपनी जेब को टटोलता है कि मोबाईल है या नहीं, इसका निश्चय करते है। इतना वह आवश्यक हो गया है। बैंक में न जाते हुए भी पैसे निकाल सकते ? ऐसी कोई व्यवस्था निर्माण होगी इसकी कल्पना ही नहीं थी पर 'ए टी एम' मशीनें आ गईं और प्रचलित हो गई. कम्प्यूटर आया टी.व्ही. आई. ऐसी वस्तुओं की सूचि बनानी पड़ी तो लोप हो गई चीजों की तुलना में बहुत बड़ी होगी. आने को तो बहुत सी चीजें आ गई पर आगे बताई चार मुख्य बातों ने हमारे जीवन तथा आज के समाज को आरपार बदल दिया है । इलेक्ट्रॉनिक, गर्भरोधक प्रकार, अन्तरराष्ट्रीय शेअर बाजार और जणुकीय तंत्र ज्ञान, मेरे से पहले की पीढ़ि को इनका अनुभव नहीं था। फिर उनसे इस काल के प्रश्नों के उत्तरों की अपेक्षा कैसे कर सकते हैं ?

इलेक्ट्रॉनिक्स की वजह से संगणक आए । टी.व्ही.आई, मोबाईल आया, पहले की वस्तुओं की अपेक्षा ये वस्तुएँ अलग हैं । चश्मा था उससे आंखों की देखने की शक्ति बढ़ गई थी । दूरबीन से और बढ़ गई, बैलगाड़ी, साइकल, बाईक, कार इन वाहनों से पैरों की शक्ति बढ़ गई । हत्यार और औजारों से हाथ की शक्ति बढ़ गई। मस्तिष्क के लिए पूरक ऐसा तंत्रज्ञान नही था संगणकने पहली बार यह कमी दूर कर दी। बिल गेट्सने संगणक से हमे सधा दिया । टि.व्ही. ने मनुष्य के अनुभव जगत की व्याप्ती बढ़ा दी. जानकारी मिलने के लिए साक्षर होने की आवश्यकता नहीं रही. घर बैठे बैठे संचार स्वतंत्रता का अनुभव मिलने लगा । मोबाईल ने जो चमत्कार किया वह हम रोज़ अनुभव होता है। पहले कि उद्योग धंधे को करने के लिए प्रचंड धनराशी

लगती थी। इलेक्ट्रॉनिक तंत्रज्ञान को उतना नही लगता। इलेक्ट्रॉनिक से ज्ञान के भंडार में रूपांतर करना आसान हो गया.

शेअर बाजार ने पृंजीपतियों की एकाधिकार की कमर तोड़ दी. पूंजी गठन की पद्धति मेरे पहले की पीढ़ि ने पहिचान ली थी । कल तक आर्थिक व्यवहार देश की सीमा के अन्तर्गत चलता था । पर मेरी पीढी में शेअर का जागतीकरण हो गया, अणुस्फोट किया इसलिए अमेरिका ने भारत पर पाबंदी लगाई उस समय अमेरिका के निवेशदारों ने क्लिंटन को मिलकर उस पाबंदी को हटाने की प्रार्थना की थी, भारत का नुकसान करने गए तो अमेरिका के लोगों के सभी नुकसान हो सकते हैं यह अंदाजा लगाकर पाबंदी हटाई थी एक देश से दुसरे देश में होने वाली निवेश ने जागतिक अर्थव्यवस्था आधार रचा, यह अपने काल में ।

एक समय में अन्न की उपलब्धता यह मनुष्य की बड़ी समस्या थी । हजारों लोग भूख से मरते थे, भारत जैसे देश में 1960 तक यह समस्या मुहबाएं खड़ी थी। बोरलॉग ने हायब्रीड बीज की खोज की और भूख से मरने वालों की मृत्यु टाली. अन्न की उपलब्धी की निश्चितता मेरी पीढ़ी में हुई. जणुकीय संशोधनने इसके आगे जाकर विपुलता निर्माण की । जणुकीय संशोधन ने केवल जीवशास्त्र में क्रांति की ऐसा नहीं वह तंत्रज्ञान बनकर जब व्यवहार में आया तब उसने अर्थव्यवस्था पर भी बहुत प्रभाव डाला. वैद्यकीय क्षेत्र में तो वह वरदान ठहरा. स्त्री पुरूषों के संबंध नीतितत्त्व के केंद्र स्थान माने जाते है । जवानी में आए हुए स्त्री पुरूष एक जगह आए तो अपत्य के जन्म की शक्यता होती है । विवाह के बिना संबंध जन्मे बच्चे ये समाज विघातक हो सकते हैं । इस समझ से नीतितत्त्व तयार किए जाने लगे. गर्भनिरोध की खोज के बाद स्त्री-पुरूष एकत्र आए तो भी गर्भ रोकना संभव हो गया । प्रचलित नीतितत्त्व का आधार उखड़ गया । यह अच्छा है या बुरा यह विषय नहीं है । पर जिस समाज में गर्भ-निरोधक रहेंगे उस समाज में स्त्री-पुरुष के संबंध को केन्द्रस्थान मान कर बनाए गए नीतितत्व चल नहीं सकते. कल तक की पीढ़ि को इसका अनुभव नहीं था ।

कहने का तात्पर्य इतना ही की 'अगले की ठोकर से पीछे वाला सावधान होता है यह युक्ति मेरी पीढ़ि को सरसरी तौर पर लागू नही पड़ता कितने ही पवित्रि ग्रंथ हो या कितने ही महान विचारशील, अगर पिछली पीढ़ि का हो तो मेरी समस्या का समाधान नहीं दे सकते स्वयं जल कर स्वयं को प्रकाश दिया तब ही तो आगे का रास्ता दिख सकेगा। '

- हिन्दी प्रस्तुति : डॉ.मधुश्री आर्य

आत्मकथन : धुनी तरुणाई

स्पर्श मणि स्पर्श - शैला सावंत

हमारे विवाह के समय रमेश के माँ-पिताजी और भाइयों ने सभी बातों में समझौता स्वीकार करते हुए शादी के लिए हामी भारी थी । 'किसी से भी क्यों न हो, कर रहा ना विवाह, करने दो,' ऐसी सभी की भूमिका थी । मेरा और रमेश का ठीक तरह जमा । वह आगे भी चलता रहा ।'

मैं साथ में होने के कारण काम ने कोई ज्यादा गति नहीं पकड़ी थी । लेकिन घरवालों को मैं संभाल लेती थी, इस कारण वह कुछ मुक्त हुआ था, घूमने के लिए । ग्रामीण क्षेत्र में लगातार घूमने से उसे ग्रामीण लोगों का जीना, न्यूनतम आवश्यकताओं के लिए भी उन्हें जो भारी जद्दोजहद करनी पडती थी वह, ये सारी बातें रमेश को बेचैन करती थीं । लोगों के परेशान जीवन के लिए क्या कोई विकल्प हो सकता है ? इसकी खोज और चिंतन लगातार चलते रहता था ।

कृषि, जल और ऊर्जा ये विषय किसी छाया की तरह, उसके साथ रहते थे । गृह या अन्य किसी तरह का निर्माण करते समय लोहे पर भारी खर्च होता है । इसके लिए पर्याय ढूंढते समय निर्माण विषय पर उसका काफी पढ़ना हुआ, खासा अध्ययन हुआ । कूलर की आवश्यकता अनुभव न हो, दिन के समय बिजली की जरूरत न पडे, ऐसा घर हो । प्लॅस्टर न करते हुए, कलात्मक रचना द्वारा कम खर्चे में घर खड़े हो, आदि पर चिंतन के लिए उसने काफी समय खर्च किया । इस शोध-यात्रा में उसकी मुलाक़ात श्री के.आर.दाते से हुई और रमेश के काम ने गति पकड़ी, उसे दिशा मिली । पीठ पर हाथ रखकर कुछ करने की प्रेरणा देनेवाली शक्ति दाते जी के रूप में प्राप्त हुई ।

औष्णिक विद्युत केन्द्र में पूर्णकालिक नौकरी, वहां होने वाला भारी शोर, उड़नेवाली राख, न चाहते हुए भी मिला हुआ विभाग और बॉस । इन सारी कठिनाइयों से होते हुए, सोमवार से शनिवार तक सप्ताह बिताने के बाद शनिवार की रात में वह मुंबई जाने निकलता था । रविवार के दिन सुबह पांच बजे से रात के दस बजे तक दाते जी के साथ अखंड चर्चा चलती थीं चर्चा हमेशा अधुरी ही रहती थी । रविवार की रात की रेलगाड़ी से निकलकर रमेश सोमवार की सुबह भुसावळ में हाजिर । ट्रेन लेट हुई तो बैग रखकर सीधा ऑफिस के लिए निकल पड़ता था । कई बार उसकी बैग देखकर ही पता चलता था कि रमेश भुसावळ आ गया है और समय की कमी के कारण प्लँट के लिए निकल गया है ।

कई सालों तक रमेश का यह साप्ताहिक मुंबई अप-डाऊन शुरू था ।

दातेजी और रमेश की अखंड मिटिंगे चलती थी । उनका विषय होता था 'सबके लिए चिरस्थायी समृद्धि'। इसके लिए प्राकृतिक साधन-सम्पत्ति का सुनियोजित व्यवस्थापन, मिट्टी, पानी, सूर्य, बायोगॅस, पानी का हिसाब, सिंचन व्यवस्था, किसी ढ़ंग का निर्माण, लकड़ी पर की जानेवाली प्रक्रिया आधारित उद्योग-व्यवसाय, ऐसे अनगिनत विषय और दीर्घ चर्चा । उसीमें से वर्ष 1990 में 'सुखवाडा' का प्रयोग आरंभ हुआ ।

तीन एकड़ जमीन में, पानी के नियोजन से, जमीन की उत्पादन क्षमता में वृद्धि करना । गांव में ही रोजगार उपलब्ध कराना । इसके लिए समान जल-वितरण मान्य करनेवाला, 25 कृषकों और कृषि-श्रमिकों का एक दल बनाया गया 'ग्रामीण विकास वाहिनी' । एक संगठन तैयार हुआ । शेळके जी ने प्रयोगशाळा के लिए जमीन दी । दल में चर्चा होकर कार्यक्रम निश्चित होने लगे । इस निमित्त से गांव में चैतन्य पैदा हुआ । कुछ भी न उगानेवाली मिट्टी में एक क्विंटल जवारी और बीस किलो उड़द पैदा हुए । उत्पन्न में प्रति वर्ष वृद्धि होती गयी । पानी के लिए अभियांत्रिकी महाविद्यालय के छात्रों ने सर्वेक्षण किया । मिट्टी, रेत, राख, सिमेंट के मिश्रण से एक नये ढ़ंग का हौज बनाया गया । श्रमदान से पाईपलाईन डाली गयी । 25 कृषकों में, प्रत्येक के तीन एकड जमीन को पानी मिलेगा ऐसी व्यवस्था की गयी । इस तालाब के पास गांववालों ने सामान पानी वितरण की प्रतिज्ञा ली । 1991 से 1995 के बीच काम होता रहा । बाद में वह रूक गया ।

बिजली की आज की समस्या, रमेश 10-12 वर्ष पूर्व ही प्रतिपादित करता था । उसपर बड़ी तड़प के साथ बोलता था । उस समय उसके बातों की तीव्रता, गंभीरता की अधिक अनुभूति नहीं होती थी । लेकिन आज कइयों को रमेश की विशेष तौर पर याद आती है ।

रमेश ने प्रकाश अष्टुरकर के पीछे लगकर उसे भी पागल बना दिया और सोलर मॉडेल खड़ा किया । उसे देखने ऊर्जा मंत्री तो आए ही लेकिन स्वास्थ्य ठीक न होते हुए भी बाबा आमटे जी हमारे घर पधारे ।

बिजली का भार नियमन, दर वृद्धि इनके कारण अल्पभूधारक गरीब कृषकों को बिजली पूरी होगी नहीं । केवल एक वृष्टि के अभाव में भी फसलों पर परिणाम होकर, कृषकों के मुँह तक आया कौर छीना जाता है, इसलिए खेतिहरों के लिए कम खर्चिले, आसान तंत्रज्ञान पर आधारित सौर ऊर्जा का मॉडल तैयार किया । प्रति वर्ग मीटर जमीन को प्रति दिन 200 डिग्री सैटिग्रेड तापमान देनेवाली 300 किलो कॅलरी सौर ऊर्जा प्राप्त की जा सकी ।

श्री. य. दाभोळकर जी के मार्गदर्शन में तथा टाटा सामाजिक विज्ञान संस्था की सहायता से वेल्हाळा (तहसिल-भुसावळ) में भी चौथाई एकड़ में प्रयोग कर

दलित महिलाओं को यह कौशल प्राप्त करा दिया । उसके बाद 'सुखाडा' गांव में अण्णा रेणके जी के मार्गदर्शन में, और टाटा ट्रस्ट के सहयोग से चौथाई एकड में प्रयोग हुआ । उसकी विस्तारपूर्वक जानकारी निम्न प्रकार की है –

महिलाओं के लिए जीवनाधार

महिलाओं को जीने का हक नकारने वाले इस समाज में, कदम कदम पर संघर्ष करते हुए जीना पड़ता है । ऐसी स्थिति में निराधार, साधनहीन, विधवा, परित्यक्ता ऐसी स्त्रियों के हिस्से दोहरा-तिहरा बोझ आता है लेकिन पुरूष-प्रधान संस्कृति के कारण किसी भी बात पर उनका स्वामित्व या नियंत्रण नहीं होता । ससुराल से निकलकर वह मायके तो आ जाती है लेकिन वहाँ भी उसकी स्थिति एक आश्रित से अलग नहीं होती । उसकी अपने हक की सम्पदा कही भी नहीं होती । ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं के पास अर्थार्जन का कोई और साधन भी नहीं होता । ऐसी स्थिति में चौथाई एकड़ जमीन का टुकड़ा उनके हिस्से में आया तो उसीमें से कायम स्वरूप की उत्पादन व्यवस्था खड़ी की जा सकती है, यह इस प्रयोग ने निश्चित ही दिखा दिया ।

प्रकल्प की भूमिका

श्रम में से साधननिर्मिती, कौशल और तंत्रज्ञान इनमें से उत्पादन और मूल्यवृद्धि और हरितीकरण से पर्यावरण संतुलन यह उद्देश्य सामने रखते हुए 'साने गुरूजी श्रमसेवा केन्द्र' तथा संलग्न संस्थाओं ने सुखाड, वेल्हाळा, खुदावाडी, भोगांव इन स्थानों पर प्रयोग किये । इन प्रयोगों से निम्न उद्दिष्ट साध्य किये जा सकेंगे ।

1) निर्धनता निर्मूलन 2) पर्यावरण संतुलन और संवर्धन 3) मृद (मिट्टी) संवर्धन 4) प्राकृतिक संसाधनों का नियोजनबद्ध उपयोग 5) स्वस्थ जीवन जीने के लिए पौष्टिक आहार 6) ऊर्जा स्वावलंबन

इस प्रयोग की प्रेरणा दी दाभोळकर जी ने । श्रमिक ने आठ घंटे काम करने के बाद, एक प्राध्यापक के वेतन इतनी राशि सृजित होनी चाहिए ऐसा दाभोळकर जी का कहना था । 'विपुलाची सृष्टि' (विपुलतापूर्ण प्रकृति)' केल्याने होत आहे रे (करने से बात बनती है) आपला हात जगन्नाथ (अपना हाथ जगन्नाथ) जैसी पुस्तकों में तथा अन्य लेखन से प्रकृति ने हमें प्रदान की समृद्धि को उन्होंने स्पष्ट किया । 'निसर्ग की उपासना करो' ऐसा फुकुओका बताकर गए तो दाभोळकर जी ने प्रकृति में अंतर्भूत हास्य खोलकर रख दिया । स्वयं, छत पर कृषि कर्म किया और भरपूर उत्पन्न सृजित किया । शोलापुर जिले के भोगाव में श्री रेणके जी ने किया हुआ प्रयोग देखा और हुक्मी उत्पन्न के विषय में विश्वास पैदा हुआ और प्रयोग का आरंभ हुआ ।

रमेश के इन सारे कामों में मेरा सहभाग था, कभी स्वेच्छा से तो कभी रमेश

के आग्रह की खातीर । रमेश जल्दी हार माननेवालों में से नहीं था । कोई सुने या न सुने, किसे पसंद आये या न आये, उसके दिमाग में उभरी कल्पना जो सामने मिलेगा, उसे समझाता था और कार्य में सहभागी होने के लिए विवश करता था । उसकी सामाजिक कार्य की, वैकल्पिक विकास की संकल्पना अमर्याद थी । जिद भी प्रचंड थी । मैं तो उससे काफी पीछे थी ।

आज इन सारे कामों की और देखने से लगता है मैं क्यों दौड़ी नहीं ? अगर मैंने और थोडा आगे जाने का प्रयत्न किया होता तो क्या कार्य ने थोड़ी अधिक गति पकड़ी होती ? आज अधूरा काम पूरा कर के विराम लेना पड़ रहा है । घर के उत्तरदायित्व में वृद्धि हुई है । संभव है उतने, सामाजिक काम भी चल रहे हैं ।

रमेश के जाने के बाद दो बच्चों की परवरिश, उन्हें अच्छा माहौल देना, उनकी सारी इच्छाएँ पूरी करना, इनमें कोई कमी नहीं आने दी । यह दायित्व कंधे पर लेते समय, समाज में विद्यमान विषमता को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता । उसके संदर्भ में प्रबोधन के कार्यक्रम लेते रहती हूँ । अपने बच्चों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण और शोषणमुक्त समाज के प्रति आस्था होनी चाहिए, ऐसी इच्छा है । किरण और राही ने कुछ बातों को मन से स्वीकार किया है । मनुष्य-मनुष्य में भेद उन्हें सहन नहीं होता । हममें से कोई भी पैसे की और एक साध्य के रूप में नहीं देखता । एक बार राही ने कहा, ''माँ मैं खुब सारा पैसा कमाने वाला नहीं हूँ, हां । मुझे अलग कुछ करना है ।'' मेरी भी इसीमे खुशी है । दोनों बच्चों से यही अपेक्षा है, ''जो पसंद आया वही करो, लेकिन आत्मनिर्भर रहो।'' उनसे मैं बार-बार कहती हूँ, ''जिस स्थिति में हो उसका आनंद लेते हुए, अधिक अच्छा करने का प्रयत्न करते रहो ।'' समाज में रहते हुए, समाज की रुढ़ियों के विरूद्ध चलते रहे, रुढ़ि-परंपराएँ मिटायीं, लेकिन मनुष्यों को जोड़ते रहें । रमेश के न रहते हुए भी सिद्धान्त के साथ समझौता नहीं करना पड़ा । जो जंचा उसे स्वीकार किया, वैसा ही व्यवहार करते रहें । जो कर रहे हैं, उसे बताने में भी आनंद है । जीने में, व्यवहार में सच्चाई और आनन्द मिला वह वाहिनी के पारसस्पर्श के ही कारण ।

धुनी तरूणाई (मराठी में) अनुवादक
संपादक : मिलिन्द बोकील और अमर हबीब ज्योतिराव लढ़के
पृष्ठ 160, कीमत 150 रू. चेतस, 22, बाजीप्रभु नगर
प्रकाशक : परिसर प्रकाशन, अंबेजोगाई - 413517 (महा.) नागपूर-440033

चिन्तन-भारती - 1

सभी समस्याओं की जड 'जाति ही'

डॉ.मारूती शिंदे

आज की परिस्थिती में अगर हम यह प्रश्न पूछें कि 'क्या जाति एक समस्या है' ? तो कोई भी उच्च शिक्षित, उच्च पदस्थ नागरिक, हो सकता है सहजता के साथ, उत्तर दे नहीं । मूलतः यह प्रश्न ही सामने के व्यक्ति को कठिनाई में डालनेवाला है । ऐसा कहना होगा कि आज पहले इतना जातियता का पालन नहीं किया जाता । इतनाही नहीं, आज की उच्चशिक्षित पीढ़ी तो जात-पात की सीमारेखाओं का भी पालन नहीं करती । इसी कारण उन्हें अन्तरजातीय विवाह करते समय अपने परिवार के सदस्यों की अनुमति आवश्यक नहीं लगती । इसके साथ ही आज पहले की तुलना में जाति के बंधन भी शिथिल होने की बात सार्वजनिक व्यवहार में भी दिखाई देती है । इसी कारण उपरोक्त प्रश्न का उत्तर नकारात्मक आ सकता है । लेकिन कुछ गंभीरता से सोचने पर ऐसा दिखाई देगा कि आज की सारी समस्याओं की जड़ जाति-व्यवस्था में ही है ।

हमने इस प्रश्न के संदर्भ में, भारत देश का अगर सर्वांगीण विचार किया तो एक चित्र ऐसा दिखता है कि जिस दरम्यान जातीय प्रश्न अत्यंत गंभीर थे उसकी तुलना में आज स्थित काफी कुछ बदल गयी है । भारत में शहरीकरण काफी तेजी से हुआ है यह स्पष्ट है । शिक्षा के कारण लोगों की सोच में बदल होने की बात प्रतीत होती है । ग्रामीण क्षेत्र का श्रमिक वर्ग नगरों में एकत्र हुआ है । जहां काम मिलेगा वहाँ, जाति और धर्म की चौखट से बाहर निकलकर, अपनी रोजी-रोटी के लिए वह केवल श्रमिक बना है । बीसवीं सदी के आन्तिम दशक से भारत ने मुक्त अर्थव्यवस्था अपनाई है ।तबसे इस परिस्थिति में बड़ा ही अन्तर आने की बात महसूस होती है । उसीके परिणाम स्वरूप आज का उच्च शिक्षित युवा वर्ग, तो लगता है मानो, जाति व्यवस्था के सीमा पार है । इतना हि नहीं, इस वर्ग को तो जाति का प्रश्न छूता तक नहीं, ऐसा हम कहते हैं। लेकिन प्रत्यक्ष जीवन-व्यवहार में कुछ अलग ही होने की बात, बारीकी से देखने पर ध्यान में आएगी ।

आज के तंत्रज्ञान के युग में संपूर्ण जागतिक स्तर पर मानव के स्वभाव में बहुत अधिक बदलाव होने की बात हमें साफ दिखती है । इसके परिणाम स्वरूप ही भारत में भी स्थिति कुछ बदलीसी दिखायी देती है । लेकिन वास्तविक स्थिति क्या हैं ? पिछले बीस-पच्चीस सालों में घटित हुईं घटनाओं का लेखा-जोखा लेने से क्या दिखता है ? इसी देश में जन्म लेनेवाली डाकुरानी फूलनदेवी, समाज की भलाई के लिए जनजागृति

का कार्य करनेवाली भंवरीदेवी पर हुआ सामूहिक अत्याचार और इस प्रकरण में न्यायालय ने दिया हुआ निर्णय, खैरलांजी के भोतमांगे परिवार पर हुआ भीषण अन्याय और उसके विरोध में आवाज उठानेवाले आंदोलनकारियों पर खुद्द गृहमंत्री जी ने लगाया नक्सलवाद का लेबल, केवल कनिष्ठ जाति की होने के कारण अपनी ही साइकिल पर कॉलेज तक जा न सकनेवाली विद्यार्थिनी, विजातीय लड़के से विवाह करने के कारण अपनी ही बेटी के लिए मृत्युदंड घोषित करनेवाली माँ, आरक्षण के विरोध में न्यायालयों ने दिये भिन्न भिन्न निर्णय, आय.आय.टी.और आय.आय.एम. के सवर्ण विद्यार्थियों द्वारा आरक्षण के विरोध में किये-गये आंदोलन, भिन्न-भिन्न पत्रिकाओं में वधू-वरों के लिए प्रकाशित होनेवाले विज्ञापन प्रत्येक चुनाव में जाति का हिसाब लगाकर हर किसी पार्टी ने बांटे हुए टिकट, आदिवासी समुदाय में कुपोषित बच्चों की हो रही मृत्यु, प्राथमिक शिक्षा की अवस्था, सार्वजनिक वितरण प्रणाली का हुआ गुडगोबर, आरोग्य सेवा का अपना ही बिगड़ा स्वास्थ्य, ये सारी बातें हमें क्या बताती हैं ? ये सारे प्रताप जाति व्यवस्था के नहीं है, ऐसा कहने की हिम्मत क्या कोई भी तटस्थ व्यक्ति जुटा पाएगा ?

आज हमने, भारत की प्रगति की प्रशंसा करते समय यह भी देखना चाहिए कि विकास के अंतरंग में छुपी उपरोक्त वास्तवता के लिए उत्तरदायी कौन है ? इस विविधता से सजी एकता के अंतरंग में जमी हुई भीषण विषमता, यह केवल और केवल जाति व्यवस्था के ही कारण है, यह हमें मान्य करना ही होगा, अन्यथा यह ऐसा क्यों ? क्या इसका समर्पक उत्तर हमारे पास है । भारत में आर्यों के आगमन के बाद भारतीय समाज की की जो रचना हुई है, वह जाति को आधार मानकर ही हुई है और इस जात्याधिष्ठित रचना का पोषण ..... वैदिक धर्म व्यवस्था ने किया है । इसी कारण वैदिक कालखंड के बाद, इस देश में भयंकर सामाजिक और आर्थिक विषमता पैदा हुई है । इस विषमता ने भारतीय समाज में समस्याओं को जन्म दिया है, जिनपर हम आजतक कोई उपाय ढूंढ़ नहीं पाए । हम यहाँ प्राचीन भारत की जातीयता पर चर्चा नहीं करेंगे । लेकिन दो हजार बीस के भारत का, दुनिया की तीसरी समर्थ शक्ति के रूप में, जब हम उल्लेख करते हैं और यह भी कहते हैं कि आज के तंत्रज्ञान के युग में जाति जैसे मुद्दों का कोई अर्थ नहीं है, तो फिर ऊपर दिये उदाहरण क्या दर्शाते हैं? अब जातीयता नहीं रही, ऐसा कहते समय, अन्तरजातीय विवाह और आम गरीबी के उदाहरण दिये जाते हैं । लेकिन इनमें कितनी सच्चाई है यह भी देखना चाहिए । आज के अन्तरजातीय विवाह ये प्रेमविवाह हैं। इन प्रेमविवाहों को ही अन्तरजातीय विवाह संबोधकर हम उनके महिमामंडन में ढोल बजा रहे हैं । पल भर के लिए इसे मान भी लिया तो क्या, जिन परिवारों में अन्तरजातीय विवाह हुए हैं उन परिवारों में जाति-व्यवस्था पर आधारित

पूर्वाग्रह और मानसिकता समाप्त हुई, ऐसा दिखाई देता है ? इसका उत्तर नहीं मिलता । वास्तव उत्तर हमें विवाह-विषयक विज्ञापन ही दे सकते हैं । कुछ लोग बताते हैं कि निर्धनता यह जाति के कारण नहीं है । इसके पुष्ट्यर्थ वे प्रतिपादन करते हैं कि निर्धनता तो ब्राह्मणों सहित सभी जातियों में मिलेगी । लेकिन प्रत्यक्ष वस्तुस्थिति देखने से ऐसा पता चलता है कि ऊँची जाति के गरीब परिवार के लोगों की सामाजिक प्रतिष्ठा इस कारण बाधित नहीं होती । लेकिन निम्न जाति के गरीब परिवारों को वही प्रतिष्ठा नहीं मिलती । प्रत्यक्ष स्थिति ऐसी दिखाई देती है कि निर्धनता में भी भिन्न-भिन्न स्तर हैं । उच्च वर्गीय जाति में लोग गरीब हैं, लेकिन वे इतने भी गरीब नहीं कि उन्हें रोजगार गॅरन्टी योजना के कामों पर या फिर अमीरों के घर वर्तन-कपडे धोने जैसे काम करने पड़े । रोजगार गॅरन्टी तथा ऐसे अन्य कामों पर जानेवाले भी लोग गरीब हैं, लेकिन इतने भी गरीब नहीं कि उन्हें भीक मांगनी पड़े । और एक वर्ग ऐसा है कि उसे पेट भरने के लिए भीक मांगने से लेकर तो सारे हीन दर्जे के काम चुपचाप करने पड़ते हैं । यह सारी स्थिति जाति और केवल जाति के कारण है।

महत्त्वपूर्ण बात यह है कि 'जाति' यह प्रत्यक्ष दिखनेवाली या शरीर को चिपकी हुई वस्तु नहीं है, जो फट् से निकाल कर फेंक दी जा सकती है । वह एक मानसिक स्थिति है, प्रत्येक व्यक्ति के मन में बसा हुआ भाव है । यह भाव अर्थात 'जाति' की पहचान, श्रेष्ठता-कनिष्ठता का मानदंड है । हमारे मन में जातीय भावना के होने का मतलब है, मैं किसी से तो श्रेष्ठ हूँ और कोई तो मुझसे कनिष्ठ या तुच्छ है, यह भान होना अर्थात जाति का अस्तित्व होना । इस भावना से ही आज की सामाजिक, आर्थिक भावनाएं पैदा हुई हैं । या केवल जीवनावश्यक बातों का ही विचार करते है और कोई तो मुझसे कनिष्ठ या तुच्छ है, यह भान होना, अर्थात जाति का अस्तित्व होना । इस भावना से ही आज की आर्थिक और सामाजिक समस्याएँ पैदा हुई हैं । हम केवल जीवनावश्यक बातों का ही उल्लेख करते हैं । आज, मनुष्य जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं के तौर पर अन्न, वस्त्र, मकान, शिक्षा और स्वास्थ्य इनको ही माना जाता है । लेकिन हमें शासकीय तन्त्र द्वारा प्रदान की जानेवाली शिक्षासेवा, सार्वजनिक स्वास्थ सेवा, आवास योजना, रोजगार हमी योजना, सार्वजनिक वितरण प्रणाली, स्वास्थ्य आदि विभागों की अवस्था क्या है ? आज भी 30% गांवों मे आरोग्य सेवक तक रोज पहुँच नहीं सकता । कई गर्भवती महिलाओं को उचित दवाइयाँ और वैद्यकीय सुविधाएँ समय पर न मिलने के कारण अपने प्राण गवाने पडते हैं । कुपोषित बालकों का प्रमाण तथा उनकी मृत्यु की संख्या दिन - ब - दिन बढ़ ही रही है । विशेष बात यह है कि ग्रामीण श्रमकारी और शहरी श्रमिक वर्ग की महिलाओं के खून में हिमोग्लोबिन का प्रमाण 6 से 7 प्रतिशत है । यहाँ की

डॉक्टर बिरादरी भी इसे कॉमन बात मानती है । जबकि स्वास्थ्य विज्ञान यह प्रतिशत 12-13 हो ऐसा प्रतिपादन करता है । इन बातों से 70% आम आदमी के स्वास्थ्य की स्थिति क्या है, इसका पता चल सकता है । इस देश के निम्न वर्गीय और कनिष्ठ जातीय परिवार के बच्चे जिन सरकारी स्कूलों मे पढ़ते है, वहां की स्थिति का क्या बखान किया जाए । सातवें दर्जे में पढ़नेवाला बच्चा 'नौ' का पहाड़ा और स्वयं अपना नाम अंग्रेजी में लिख नहीं सकता, यह महाराष्ट्र के शिक्षा मंत्री महोदय ने स्वयं ही स्वीकार किया है । मुंबई जैसे बड़े शहरों में 40% जनता गंदी वस्तियों में रहती है । वहां की सार्वजनिक सुविधाओं के विषय में कुछ न कहा जाए तो ही अच्छा । साल में सौ दिन रोजगार देनेवाली सरकारी योजना में क्या चल रहा है , यह हम सारे जानते ही हैं । सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अंतर्गत चलनेवाली उचित दर की अनाज की दुकानों से किस दर्जे का माल इस कष्टकरी वर्ग में है । यह अवस्था केवल पिछले पांच-दस वर्ष की देन नहीं है, तो आज़ादी के बाद निरन्तर चलती आ रही है । वह ऐसी ही है, इसके पीछे क्या कारण है ? भारत को आज़ादी मिलकर 67 साल हो गए हैं । स्थिति बदलने की तो कोई आशा नहीं लेकिन उसमें थोड़ा भी सुधार क्यों नहीं हो रहा, इसका उत्तर जाति व्यवस्था में छुपा है ।

सरकार की ओरसे दीजारहीं इन सुविधाओं के लाभार्थी वर्गो का जातीय विश्लेषण करने पर ऐसा दिखाई देगा कि यह वर्ग दलित तथा बहुजनों का अर्थात क्षुद्रातिक्षुद्रा का है और शासकीय तन्त्र के मार्फत सेवा पूर्वि करनेवाला उच्च वर्गीय अर्थात धनी वर्ग है । इस देश के कनिष्ठ वर्ग की जनता सुखी-सम्पन्न हो, समाधान के साथ स्वावलंबी और आत्मसम्मानी जीवन जीए ऐसा इस देश के धनी वर्ग को नहीं लगना । इस देश के सत्ता स्थानों पर धन के बाहुबली बैठे है । इन धन मुस्टंडों की जातीय मानसिकता ऐसी है कि कनिष्ठ या अप्रतिष्ठित अर्थात दलित-बहुजन समाज के लोग लगातार कष्ट करनेवाला वर्ग बनकर ही रहें । उनकी उन्नति नहीं होनी चाहिए । इनकी उन्नति होने से उनमें आर्थिक समृद्धि आने से ये लोग हमसे बराबरी का व्यवहार करने का प्रयत्न करेंगे । उनका जीवन स्तर सुधरा तो वे हमें श्रेष्ठ मानने से इन्कार कर देंगे । हमारा प्रभुत्व नष्ट होगा । (हमें गुलाम/अर्धगुलाम कहां से मिलेंगे ?) यह सब अनजाने में घटित नहीं होता, तो मनुस्मृति ने इस उच्च जाति पर किया हुआ जातीय श्रेष्ठत्त्व का संस्कार ही व्यवस्थित ढ़ंग से काम करता है । यह सत्य कैसे नकारा जा सकता है ?

अनुवादक
ज्योतिराव लढ़के, नागपूर

डॉ.मारूती शिंदे
हिन्दी विभाग प्रमुख
वालचन्द कला व विज्ञान म.विद्यालय, शोलापूर

(साभार : विषमता निर्मूलन शिविर पुणे : अगस्त 2014)

चिन्तन-भारती - 2

जलाओ दिये पर रहे ध्यान इतना अंधेरा धरा पर कहीं रह न जाये - नीरज

क्या आपने नेत्रदान किया है ?

वस्त्रदानफलं राज्यं पादुकाभ्या च वाहनम्
ताम्बुलाभोगमाप्नोति नेत्रदानात्फलत्रयम् ।

अर्थात् वस्त्रों का दान करने के फलस्वरूप राज्य प्राप्त होता है, पादुकाओं का दान करने से वाहन प्राप्त होता, ताम्बुल का दान करने से संसार के समस्त भोग एवं ऐश्वर्य प्राप्त होते हैं, परन्तु केवल नेत्रदान करने से ये तीनों ही फल स्वतः प्राप्त हो जाते हैं–ऐसा शास्त्रों में नेत्रदान की महिमा का वर्णन करते हुए कहा गया है ।

हमारे देश में प्रत्येक वर्ष प्रकाश पर्व दीपावली के रूप में मनाया जाता है जिसका एक ही भाव होता है अंधकार को दूर भगाना । प्रत्येक मनुष्य को अपने जीवन में ऐसा दीप जलाना चाहिए जिससे प्रत्येक मनुष्य के जीवन का अंधकार दूर हो सके क्योंकि प्रातः देखा जाता है कि प्रत्येक दीपक तले अंधेरा होता है जिसको दूसरा दीपक ही स्वयं जलकर उस दीप के तले के अंधकार को दूर कर देता है । और दोनों दीप के तले अंधकार को दूर कर देता है और एक दीप से दूसरा दीप जलाया जा सकता है । इस प्रकार यदि श्रृंखलाबद्ध तरीके से दीप से दीप जलाते चले जायें तो हर दीप का प्रकाश, प्रकाश की ओर बढ़ता चला जाता है । जिससे सब ओर प्रकाश ही प्रकाश होगा और सम्पूर्ण संसार का अंधकार समूल नष्ट हो जायेगा ।

यहाँ कहने का तात्पर्य है कि जिनके जीवन में नेत्र ज्योति नहीं है उनके जीवन में ज्योति लायी जाये, जिससे सब कुछ देखा जा सकता है और उनका जीवन प्रकाशमय हो सकता है अन्यथा यदि उनके जीवन में नेत्र ज्योति ही नहीं है तो उनकी दुनिया में अंधेरा ही अंधेरा है ।

अपने जीवन में खुशियों के दीप जलाते हो तो यह भी ध्यान रखो कि संसार में अन्य ऐसे अनेक प्राणी हैं जिनके जीवन में अंधकार है । उनको भी अपनी खुशियों में सम्मिलित कर लो । इस प्रकार जब तुम दूसरों को भी खुशियाँ प्रदान कर उनके जीवन के अंधकार को दूर करो तो उनके जीवन में तो खुशियाँ आयेंगी ही, तुम्हारी भी आत्मा को संतोष प्राप्त होगा ।

आज भारत नहीं बल्कि विश्व में नेत्रांधता बढ़ती जा रही है नेत्रांधता बढ़ने

के विभिन्न कारण हो सकतें हैं जैसे–जन्मांधता, मोतियाबिन्द, ग्लुकोमा, ट्राकोमा, रिवर ब्लाईडनेस, मधुमेह नेत्रांधता, दुर्घटनावश नेत्रांधता आदि । नेत्रांधता को रोकने के लिए वैज्ञानिकों द्वारा विज्ञान के माध्यम से दिन–प्रतिदिन नये–नये अविष्कार किये जा रहे हैं आपरेशन की नयी–नयी विधियाँ वैज्ञानिकों द्वारा खोज ली गयी है जिससे नेत्रांधता को दूर किया जा सकता है । इसके लिए सरकार एवं सामाजिक संस्थाओं द्वारा भी सजग होकर समय–समय पर विभिन्न उपाय किये जा रहे हैं । अनेक चिकित्सालय तथा शिविर स्थापित किये जा रहे हैं जिनमें डाक्टरों द्वारा नेत्र रोगियों की निःशुल्क चिकित्सा प्रदान की जा रही है । परन्तु अभी तक नेत्रों का विकल्प अर्थात कृत्रिम नेत्र वैज्ञानिकों द्वारा तैयार नहीं किया जा सका है । यद्यपि वे इसके लिए प्रयासरत् हैं । सम्भव है भविष्य में नेत्रों का कोई विकल्प निकल आये और किसी से नेत्रदान लेना ही न पड़े ।

नेत्रांध लोगों को ज्योति प्रदान करने का एक ही विकल्प है नेत्रदान । दान के लिए हमारा देश विश्वविख्यात है । विश्वकल्याण की भावना से दिया हुआ दान कैसा भी हो सकता है – विद्यादान, अन्नदान, अस्थिदान, देहदान आदि–आदि । दानदाताओं में ऐसे दानी हुए हैं जो दान देकर संसार में सदैव के लिए अमर हो गये हैं । जिनमें महर्षि दधीचि, महाराज शिवि, महाराज कर्ण, महाराज बलि, महाराज हरिश्चन्द्र आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं और इतिहास में उनका नाम स्वर्णाक्षरों से लिखा हुआ है । इसी श्रृंखला में धामपुर (जनपद बिजनौर) के एक समाज सेवी स्व. हरिश्चन्द्र आत्रेय ने भी नेत्रदान हेतु प्रेरित कर लोगों में जागरूकताउत्पन्न की थी । उनकी प्रेरणा से प्रेरित होकर 1984 से 2009 तक सात हजार से अधिक व्यक्तियों ने अखिल भारतीय नेत्र अनुसंधान केन्द्र, दिल्ली में अपने पनेत्रदान दिये थे ।

दुःख का विषय तो यह है कि हमारे देश में अभी नेत्रदान के लिए लोगों में जागरूकता नहीं है। दूसरे उनमें अंधविश्वास की भावना भी व्याप्त है कि मृत्यु के प–श्चात् नेत्र निकाल लेने के पश्चात् दूसरे जन्म में व्यक्ति नेत्रहीन होगा। इसके साथ ही साथ यह कि शरीर कुरूप हो जायेगा। जबकि वास्तविकता इसके विपरीत है । इसके अतिरिक्त अभी हमारे देश में सरकार द्वारा भी प्रचार–प्रसार नहीं किया जा रहा है ।

नेत्रदान के लिए कोई भी व्यक्ति मृत्यु उपरान्त अपने नेत्रदान कर सकता है। इसके लिए नेत्रदान संस्था के माध्यम से नेत्रदाता द्वारा इच्छापत्र भरा जाता है, जिसमें नेत्रदाता अपने नेत्रदान करने का संकल्प लेता है । इसके लिए उसको एक प्लास्टिक का अभिलेख पत्र (प्लास्टिक परिचय कार्ड) दे दिया जाता है । जिस समय उसकी मृत्यु होती है तो परिवार के सदस्य उसकी सूचना नेत्रदान संस्था को दे देते हैं जो

हर जनपद में होती है । सूचना पर डाक्टर आता है और नेत्रदाता की दोनों आँखें निकला कर ले जाता है । सबसे विशेष बात है कि नेत्र निकाल लेने के पश्चात नेत्रदाता का चेहरा विक्रत नहीं होता है । यह निकाली गयी आंखें रसायन में सुरक्षित रख ली जाती हैं और जिन नेत्रहीनों को आवश्यकता होती है उनके शरीर में एक निश्चित अवधि में प्रत्यारोपित कर दिया जाता है और वे नेत्रहीन उन प्रत्यारोपित आँखे से दृष्टि पा जाते हैं और उनका अंधकारमय जीवन ज्योतिर्मय हो जाता है इसी कारण यह नेत्रदान अमूल्य निधि है और नेत्रदाता इस लोक में तो पुण्यनिधि एकत्र करता ही है इसके साथ ही साथ वह परलोक में भी पुण्यनिधि प्राप्त करता है हमारा शरीर मृत्यु के पश्चात या तो जलकर राख होना है या फिर जमीन में दफन होकर मिट्टी में परिवर्तित होना है तो क्यों न हम मृत्यु पश्चात् अपने शरीर के अंगों को दान कर जायें जिससे सभी को लाभ हो ।

प्रस्तुति : *श्रीमती विमला देवी*
ए-11/एफ डी.डी.ए.मुनीरका, नई दिल्ली

समाचार भारती - 1

युवा संगठनों की भारतीय समिति

१९ वां राष्ट्रीय युवा महोत्सव २०१५ गुवहाटी (आसाम) में

स्वामी विवेकानन्द की जन्म शताब्दी मनाने की लिए युवासंगठनों की भारतीय समिति का 19 वाँ राष्ट्रीय युवा महोत्सव इस वर्ष 8 से 12 जनवरी 2015 को गोहाटी असाम मे सम्पन्न हुआ है । श्री सर्वानन्द सोनोवाल भारत सरकार के क्रीडा एवं युवा राज्यमंत्री ने नेहरू स्टेडियम गुवाहाटी में सम्पन्न हुए उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता की । असाम के मुख्यमंत्री श्री तरूण गोगाई प्रमुख अतिथि के रूप में उपस्थित थे ।

यह युवा महोत्सव भारत सरकार के क्रीडा एवं युवा मंत्रालय की ओर से पांच हजार युवाओं को लेकर होने वाला एक ऐसा प्रसंग है जो देश के युवाओं को कला एवं संस्कृति के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा और कौशल दिखाने का अवसर देना चाहती है।

इस पंच दिवसीय महोत्सव में युवा प्रतिभा, विभिन्न आयामों को, युवाकृति, पाक उत्सव, युवाकलाकार शिबिर युवा सम्मेलन, सुविचार और साहसिक गतिविधियों से प्रगट करने का अवसर देती है । इसके अतिरिक्त स्पर्धात्मक और स्पर्धा रहित कार्यक्रम विभिन्न प्रान्तों से आए युवाओं की शक्ति का प्रमाण देते हैं ।

– हिन्दी प्रस्तुति : *डॉ.मधुश्री आर्य*

विशेष आलेख - 3

प्रबोधन की पगदंडी

चर्चा अर्थात चॅनेल की शेरेबाजी और वाद अर्थात मुद्दों के बदले मुद्दे ऐसे आज मटमैले वातावरण मे सीधे गंभीरतासे एकाधे विषय की प्रस्तुति हो, उसके बारे में मत और मतांतर सामने और उसमें से कुछ तत्वबोध हो, इस प्रकार का व्यासपीठ निर्माण हो इस हेतु से लोकसत्ता ने 'बदलता महाराष्ट्र' इस उपक्रम का प्रारम्भ किया उसे अब एक वर्ष हो रहा है । इस उपक्रम का दूसरा भी एक हेतु था । महाराष्ट्र में पिछले साठ पैंसठ वर्षोंमें क्या हुआ ऐसा प्रचारी प्रश्न हमेशा अपने कान में पड़ता है उस प्रश्न में ही 'कुछ भी नही' यह उत्तर पूर्वगृहीत है परन्तु क्या सही ऐसी परिस्थिति है ? कोई कितना भी आँखे बंद करले तो भी महाराष्ट्र बदला है और बदल रहा है इस वस्तुस्थिति को नकार नहीं सकते मूलतः बदलाव पर निरंतर और स्थाई प्रक्रिया होने से परिवर्तन हुआ इसमे वैसे आश्चर्य होने जैसा कुछ कारण नहीं । यहाँ महत्त्व की होती है । बदलाव की दिशा, वह प्रगति की ही या अधोगामी रहे बीचमें यह जान लेने की आवश्यकता होती है । 'बदलता महाराष्ट्र' का यह भी एक हेतु था। इस दृष्टि से अबतक शिक्षण, उद्योग कृषि आदि कुछ महत्त्वपूर्ण विषयोपर विचार मंथन किया गया। उसका ही आगे का भाग पूना में हुआ, सामाजिक आंदोलन का बदलता चेहरा इस विषय पर पूना में लगातार दो दिन चर्चा की गई । महाराष्ट्र के सामाजिक और वैचारिक क्षेत्र में कार्यरत ऐसे अनेक आदरणीय इस चर्चासत्र में सहभागी हुए । वहाँ क्या हुआ, कौनसे विचार प्रस्तुत किए गए यह महत्त्वपूर्ण बात है । उसकी खबरें लोकसत्ता में प्रकाशित हुईं । पर उसके साथ साथ यह चर्चा जिस तरीकेसे आयोजित की गई वह भी महत्त्वपूर्ण है।

भारतीय परंपरा में वादविवादों को अनन्य साधारण महत्त्व है। भारतीय तत्त्वज्ञान को तथा दर्शन शास्त्र को वादविवाद की सहायता मिली । यह उदार मतवाद का इतिहास है । अभियान से शिरोधार्य करें ऐसा सहिष्णु रीति का इतिहास है परन्तु इतिहास से हम कुछ सीखने का नहीं या इतिहास का प्रयोग वर्तमान के क्षुद्र हेतु के लिए यह अनेकोंने पक्का निश्चय होने के बाद सभा नामका प्रकार भी अब हद्दपार हो गया है । जहाँ वाद होते हैं उसे व्यासपीठ कहने की जगह पर अखाडा कहें ऐसी परिस्थिति निर्माण हुई है । ऐसे समय में सही तो ऐसे माध्यमोंकी

बहुत बडी जिम्मेदारी है । परन्तु इन माध्यमों से उसमें सभी दृकश्राव्य माध्यमों ने तुम्हारी खुशी ही हमारा सौदा ऐसा बाजारू भूमिका ली है और 'मनोरंजन यही हमारा मूल्य विवेक' ऐसा निःसंकोच बेशरम होकर व्यक्त किया, कहने पर गंभीर चर्चा को मौका दी शेष नही रहता । अनेक मुद्रित माध्यमों ने यही आदर्श नमूना की नकल की । इन माध्यमों को जैसे वाचक संख्या की खाऊंखाऊं शुरु हो गई। उसे भरने में वाचकों का अनुनय इतने स्तर पर गया कि मुद्रित माध्यम के पृष्ठ और दूरचित्रवाणी वाहिनी के परदे दोनों में अन्तर पहिचानना कठिन हो गया । जो पर्दे पर वही पृष्ठों पर । इस परिस्थिति में वाचकों की बुद्धिमानी का हम अपमान करते हैं इसका भी ध्यान छूट गया । इसका अपवाद अर्थात लोकतंत्र का लोकसत्ता ने मनोरंजन का कभी विरोध नही किया । अगर उसे अस्वीकार किया तो समूचा जीना ही सूखा कोरा होगा । पर लोकसत्ता ने केवल वाचकरंजन यही ध्येय ऐसा नहीं माना, पौष्टिक और संतुलित आहार देते समय, कई प्रसंगोमें कडुवा काढ़ा भी देकर समाज का मानसिक स्वास्थ्य सुदृढ करने के लिए उद्यत रहना यह आद्य वृत्तपत्रों के ध्येय. वही वारसा लोकसत्ता ने स्वीकारा, संभाला । बदला महाराष्ट्र इस व्यासपीठ से सामाजिक आंदोलन के बदलते चेहरोका वेध लेने का प्रयत्न ही इस वारसे का भाग था।

महाराष्ट्र की आज की परिस्थिति देखें तो एक बात स्पष्ट रूपसे ध्यान में आती है कि यहाँ सामाजिक वातावरण मे कमाल का बदल हो गया है और कोई भी सुधारणा वादी आंदोलन असंभव होवे इसका कारण सामाजिक बदलाव में ही है । धर्म जाति, पंथ की अस्मिता एकतरफ अधिक नाटी और उलझती बनती जा रही है। हिन्दु मुस्लिम, ख्रिश्चन ऐसे सब धर्मो मे धर्मगुरुओं का दहशतवाद बढा हुआ होने से उनका विरोध करनेवालो को मार डालनेतक उनका पड़ाव जा रहा है यह वास्तव इस परिषद में स्थापित किया गया । उससे सब धर्म आज बदलाव के कौनसे टप्पे पर है इसका भान रखे दूसरी तरफ इस वास्तव को दिशा देने का काम करनेवाले सामाजिक आंदोलन बड़े प्रमाण में एन.जी.ओकरण हो गया है उसके भी आगे शुरू हुआ आंदोलन एकाधे मुद्दे के लिए, प्रश्न के लिए लड़ते हुए दिख रहे हैं । उनकी व्यापकता गुम हो गई है । वैचारिक स्तर पर तो और अलग ही हाल हैं । धर्मसुधारणा का शब्द निकालना यहाँ धाड़स की बात सिद्ध हो गई । इस परिस्थिति में इन दो दिनोंकी परिषद में श्रद्धा और अंधश्रद्धा, धर्मसुधारणा, वारकरी, संप्रदाय, जातिअंत का उपाय, समता और समरसता, सामाजिक मुद्दों का राजकारण पर परिणाम ऐसे

छह विषयोंपर विचारमंथन किया गया, ये सब विषय वैसे वाद के हैं । मनुष्य बोलते बोलते हातापाई पर कब आ जाएगा इसका भरोसा नही । तो भी उस सखोल और वादविवादों के सब संकेत पाल कर इस परिषद में चर्चा हुई । एक ही समय में व्यासपीठ पर बाएं, दाएं और उनसे भी अलग विचारोंवाले वक्ता बैठे थे । उनका प्रतिपादन सामने के श्रोता शांतिसे सुन रहे थे । अपनी शंका और प्रश्न पूछकर विषय को अधिक स्पष्ट करने का प्रयत्न चल रहा है । ये सब चित्र बड़े मनोहरी थे । अनेकों को तो देखकर भारतीय परंपरा के वादसभा की याद आ गई, परंतु यहाँ का वाद जैसे किसी को जिताने के लिए नहीं था, वैसे ही किसीको हराने के लिए भी नहीं था । उस समग्र चर्चा को हेतू ही विषय के मूलमें जाकर उसे समझ लेना था । उस दृष्टि से वहाँ सब विद्यार्थी थे और इसीलिए श्रद्धा-अंधश्रद्धा पर की चर्चा में अंधश्रद्धा ही क्या, पर देव पर की श्रद्धा भी नकारे, ऐसा लोकायत दर्शन को नजदीक करने वाली ऐसी आवाज उठी इसलिए किसको भावना विचार का झटका आया नहीं कि जाति अंत का मार्ग कौनसा? इस चर्चा में आरक्षण से जाति भेद फैलता है ऐसे मत मांडे गए । इसलिए किसके बाँई कोख में टीस नहीं उठी । महाराष्ट्र के वारकरी आंदोलन की एक पहचान धार्मिक सुधारवादी आंदोलन ऐसा भी दी जाती है । परन्तु इस आंदोलन में जाति अंत का हेतु आरोपित मत करें वह जातिअंत का नहीं तो जातिजाति के विद्वेष कम करने की लड़ाई थी, ऐसे दृढ और ठोस विवेचन वारकरी आंदोलन के परिसंवाद में किया गया, तब यह केवल नया कुछ अर्थ खुलने का बौद्धिक आनंद हुआ, इस का कारण इस प्रतिपादन के पीछे का हेतु साफ होता है । उन-उन प्रश्नों के कंगोरे जांचने का था यह सचमुच आज के काल में शानदार बात है ।

अब प्रश्न यह है कि चर्चा के आगे क्या होगा ? चर्चा हुई इधर-उधर बात फैली और सब समाप्त, ऐसा तो होगा नही? यह एक समझदारी की शंका कहकर ठीक है । परन्तु विचार कभी बेकार नहीं जाते, समाचार, लेखों की, पुस्तकका, इन्टरनेट के माध्यम से यह विचार लाखों लोगों तक पहुंचेगा ही। उसमे समाज मे विचारशील लोग है वैसे ही निर्णय प्रक्रिया के अधिकारी, नेता भी है । एकाधा विचार बीज, इसमें कहीं न कहीं तैयार होगा ही । इसमें से प्रबोधन भी पगदंडी थोडी सी अगर फैली तो भी ऐसे उपक्रम सफल और पूर्ण हो गए ऐसा कह सकेंगे ।

लोकसत्ता से साभार

– हिन्दी प्रस्तुति : *डॉ. मधुश्री आर्य*

सानेगुरुजी रुग्णालय, किनवट (महाराष्ट्र)

अन्यान्य कार्यक्रम

1. साने गुरूजी जयंती तथा सानेगुरुजी रूग्णालय के तीन दिवसीय वर्धापन समारंभ का उद्घाटन 24 दिसम्बर की प्रातः ग्यारह बजे कन्याकुमारी से कश्मीर और अरूणाचल से ओखा की भारत-जोड़ो यात्रा में सहभागी हुए सायकिल यात्री सर्वश्री गोरख वेताळ, बाबासाहेब सूर्यवंशी, कल्याण कुमार कदम, शुभांगी आबनाने तथा बाळू सोनवणे द्वारा स्फूर्तीदायक वातावरण में हुआ । इस कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री आर.डी.चौधरी थे ।

उद्घाटन समारोह में अतिथियों ने दीप प्रज्वलन कर तथा साने गुरूजी के चित्र पर पुष्पहार अर्पणकर कार्यक्रम प्रारम्भ किया । कार्यक्रम का संचलन डॉ.मार्तण्ड कुलकर्णी कर रहे थे । उद्घाटन के पश्चात बाल आनन्द मेले का उद्घाटन सी.सी.आर.टी.समन्वयक श्रीमती कविता जोशी ने गणेश की मूर्ति तयार कर लातूर के दत्ता सगट ने चित्रांकन कर तथा आठवीं कक्षा के विद्यार्थी सदानन्द पिटलेवाड ने मूर्ति तय्यार करके किया. रंग भरना, चित्रकला, मूर्तिकला, खेल, गाने, नारे इत्यादि कार्यक्रम हुए, समस्त सहभागी विद्यार्थी बहुत उत्साही थे. बाल मेले का संचलन शिवाजी बामनीकर ने किया।

2. प्रकृति ने हम सबको भरपूर दिया है लेकिन आज विकास की व्याख्या पर चर्चा करने की जरूरत है । राष्ट्रीय संतों की पोथियों का पारायण करते बैठने की अपेक्षा उनके विचारों के अनुसार कृति करने की आवश्यकता है । योजनाओं का नियोजन ग्रामीण भाग के विकास का विचार कर करना आवश्यक है । ऐसा प्रतिपादन आदर्श ग्राम योजना समिति के अध्यक्ष श्री पोपट पवार ने किया. वे भारतजोड़ो युवा अकादमी की ओर से आयोजित श्रमश्री बाबा आमटे स्मृति व्याख्यानमाला में बोल रहे थे । दिनांक 25 दिसम्बर 2014 को उनकी उपस्थिति में ग्राम विकास मेले का आयोजन किया गया था ।

इसके अध्यक्ष विधानसभा सदस्य प्रदीप नाईक थे । इस कार्यक्रम में नांदेड जिल्हा परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री अभिमन्यु काळे, जिला परिषद सभापति श्री दिनकर दहीफळे तथा तहसीलदार शिवाजी राठौड उपस्थित थे ।

अपने भाषण में बोलते हुए श्री पोपट पवार ने कहा कि सरकार ने

अनुदान और पॅकेज से बढ़कर खेती के उत्पादन को उचित मूल्य देना चाहिए । यदि इतना भी किया गया तो किसान, गाँव तथा देश का विकास होगा । राष्ट्र हित ध्यान में रखते हुए ही योजनाओं का क्रियान्वयन जरूरी है । भाषण के अन्त मे उन्होंने जलसंधारण की आवश्यकता तथा ग्राम विकास के कार्य करने में तरूणों ने नेतृत्व करने की आवश्यकता पर बल दिया ।

विधानसभा सदस्य श्री नाईक ने किनवट तालुके में कई गाँवों में आदर्श ग्राम योजना की संकल्पना साकार करेंगे, ऐसा कहा ।

इसी अवसर पर डॉ.कुलकर्णी लिखित भारूड की प्रस्तुति तथा प्राध्यापक राज मोतेराव संपादित 'आदिवासी साहित्य जाणीवजागर' इस पुस्तक का प्रकाशन अतिथि महोदय ने किया ।

युवतियों ने स्वयं सिद्धा होने के लिए स्वयं ही प्रयत्न करना चाहिए । समाज ने प्रगतिशील समाज बनाने के लिए बेटी बचाओ- बेटी पढ़ाओ इसे क्रियान्वित करना चाहिए । ऐसा अशोक बेलखोडे ने कहा, किनवट में क्रीडा व युवक क्रीडा संचालनालय तथा जिला, क्रीडाधिकारी नांदेड की ओर से 24 दिसम्बर से 2 जनवरी 2015 तक युवतियों के लिए स्वयं सिद्धा विशेष शिबिर का आयोजन किया गया था । तालुका क्रीड़ा समन्वयक प्राध्यापक सय्यद फैय्याज भी उपस्थित थे । इस कार्यक्रम में डॉ.बेलखोडे ने कहा कि आज युवतियां सभी क्षेत्रों में आगे बढ़ रही हैं । परन्तु ग्रामीण भाग की युवतियों को विविध क्षेत्रों में आगे आने की आवश्यकता है । उनके पालकों की मानसिकता भी बदल रही है । यह एक समाज निर्माण की अच्छी प्रक्रिया है । डॉ.सुनील व्यवहारे, डॉ.शुभांगे दिवे इन्होंने भी युवतियों का मार्गदर्शन किया । इस शिविर में कराटे व आरोग्य प्रबोधन जैसे अनेक उपक्रम किए गए ।

4. डॉ.बेलखोडे को 'नातु पुरस्कार'

पुणे महाराष्ट्र के नातु ट्रस्ट की ओर से प्रतिवर्ष सामाजिक कार्य करने वाले व्यक्ति को पुरस्कार दिया जाता है । इस वर्ष 'महादेव बळवन्त नातु पुरस्कार' नांदेड जिले के किनवट में निरन्तर कार्यरत डॉ.अशोक बेळखोडे को 9 जनवरी को सायं. 6 बजे भारतीय विद्या भवन के सभागृह में प्रदान किया गया.

साने गुरूजी रुग्णालय के माध्यम से आदिवासी भाग में सेवारत डॉ.अशोक बेळखोडे को एक लाख रूपये, शॉल व स्मृति चिन्ह देकर पुरस्कृत किया गया ।

हिन्दी प्रस्तुति - डॉ.मधुश्री आर्य

राष्ट्रीय युवा योजना द्वारा आयोजित आंतरभारती बाल आनंद महोत्सव

लहरागागा (पंजाब) दिनांक : २०/११/२०१४ से २४/११/२०१४

राष्ट्रीय युवा योजना नई दिल्ली, आंतरभारती और सीबा इन्टरनेशनल पब्लिक स्कूल लहरागागा पंजाब के संयुक्त तत्वावधानमे आंतरभारती बाला-आनंद महोत्सव का सुंदर आयोजन किया गया ।

आंतरभारती के स्वप्न द्रष्टा साने गुरुजी चाहते थे कि भारतको जातिवाद, धर्मभेद, प्रदेशवाद, भाषावाद, स्त्रीपुरूष भेदभाव, छुआछूत और भय से मुक्त करना है तो बच्चों के समूह आते हैं । स्थानीय स्कूल के यजमान बच्चों के घर मेहमान बनकर पांच दिन रहते हैं । भाषा, रहन सहन, खाना, संस्कृति अलग होते हुए भी बच्चों के बीच दोस्ती बन जाती है । हृदयकी वाणी काम करने लग जाती है ।

बालआनंद महोत्सव का पूरा मार्गदर्शन भाईजी एस.एन.सुब्बाराव करते हैं । सुबह झंडा वंदन से लेकर खेल, सर्जनात्मक प्रवृतियां, संस्कार कार्यक्रम, भारत की सन्तान, सर्वधर्म प्रार्थना वगैरह कार्यक्रम में उनकी सक्रिय भागीदारी रहती है । इसके कारण बच्चों को राष्ट्रीय संस्कार मिलते हैं ।

इस बार मणिपुर, त्रिपुरा, छत्तीसगढ, बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, उत्तराखंड, हिमाचल, पंजाब, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आन्ध्र, तेलंगाना से 400 बच्चे आये थे । जो स्थानीय यजमान बच्चों के साथ लहरागागा में मेहमान बने । स्थानीय बच्चोंमें इतना उत्साह था कि जाखल रेल्वेस्टेशन से सीधे अपने घर ले गये ।

बच्चे सुबह 8.30 बजे सीबा स्कूलमें पहुँच गये । सीबा स्कूलके स्थानीय बच्चोंने विभिन्न चीत्रों से सजाया था । ध्वज, रसोईविभाग, सभास्थल, पूरा परिसर अच्छी तरह से सजाया गया था । मेहमानों की रहने खाने की उत्तम सुविधा थी । पूरा परिसर स्वच्छ और सुंदर था । सीबा स्कूलका हर सदस्य कार्यक्रम को सफल बनाने में तत्पर था । हरेक के मुख पर आनंद का भाव था । 9.00 बजे ध्वजवंदन हुआ । इसकी प्रविधि भी बच्चोंको सिखाई गई । बादमे बच्चे पंडालमें पधारें स्वागत समारोह में संगरूर के एस.डी.एम पधारे थे । उनके हाथों बाल महोत्सव का उद्घाटन हुआ । उन्होंने अपने व्यक्तव्य में कहा कि आपको ये महोत्सवमें एक अच्छा पाठ मिलने वाला है ।

भारत मे विभिन्नता होते हुए भी भारत एक है । ज्यादा भाषा सीखोगे तो मगज़ तेज़ होगा कोई भी चीज़ सीखना है तो 10 हजार घंटे लगादो । आप जरूर सीखोगे। सीबा स्कूल के मेनेजींग डाइरेक्टर कमलजीत ढीन्डसा ने बच्चों का स्वागत करते कहा कि आपको यहाँ कोई ऐतिहासिक स्थल या कोई प्राकृतिक स्थल देखने को नहीं मिलेगा पर आपको पंजाब के प्यार मिलेगा । आपके और हमारे लिए एक यादगार प्रसंग होगा । भाईजीने भी बच्चों का पूरे प्यार से स्वागत किया दोपहर को सबने पंजाबी खाना मक्के की रोटी और सरसो का साग खाया । दो बजे लहरागागामें बच्चों की रैली हुई । स्थानिक मित्रोंने बडे होर्डींग लगाए थे । बच्चों का स्वागत अच्छी तरह किया गया। भारतजोड़ो के नारो से पूरा लहरागागा गूंज उठा । बीचमें बच्चों को फल, बिस्कीट और समोसे खिलाके स्वागत किया गया । अनाजमंडी में सभा के रूप मे सब बैठ गये । बच्चोंने मणिपुरी, राजस्थानी, उडिया नृत्य प्रस्तुत किए । सर्वधर्म प्रार्थना हुई । भारतकी संतान जिसमे भारतकी 18 भाषा का अभिनय गीत प्रस्तुत किया गया । पूरी मंडी बच्चे और स्थानिय लोगों से भर गई थी । बच्चों को प्रोत्साहित करने पंजाबकी पूर्व मुख्य मंत्री पधारी थीं । उन्होने बच्चो को प्रोत्साहित किया भाइजी का सम्मान किया । बच्चोंने हस्ताक्षर कें लिए मुख्यमंत्री को रोक दिया और धीरज से बच्चों को हस्ताक्षर दिए ।

दूसरे दिन ध्वजारोहण के बाद खेल खेले गये बादमें सभा मंडप में तरह तरह के व्यायाम सिखाए गये । बच्चों को मेदान में ही धीमी दौड से दौड़ना था । भाईजी के साथ बच्चे भी दौडने लगे । एक सुहावना दृष्य था । 1.00 घंटे के खेल के बाद बच्चे क्रिएटीवीटी मे चले गये जहाँ 2.00 घंटे तक चित्रकारी, महेंदी, संगीत, इन्डोरगेम वगैरा कक्ष में प्रवृत्तियां कीं । ये एक्टीवीटी में बच्चों को पूरी आझादी थी । उस समय शिक्षकों के लिए एक प्रशिक्षण का कार्यक्रम भी रखा जिसमे सत्यप्रकाशी भारत जो दिल्ली से आये थे जिन्होने जीवन का मूल्य क्या है ? सच्ची शिक्षा की पूरी कल्पना क्या है ? शिक्षक कर्मचारी होगा या कार्यकर्ता इस विषय पर संबोधन किया । आये प्रश्नों का उत्तरभी दिया गया । श्री हर्षदभाईने कार्यक्रम का संचालन किया । दो प्रहर खाने के बाद बच्चों को भंगडा और गिद्दीनाच सिखाया । 4.00 बजे चाय के बाद संस्कार कार्यक्रम और सर्वधर्म प्रार्थना हुई । शाम 6.00 बजे बच्चे अपने घर पधारे ।

तीसरे दिन हमे संगरुर जाना था ध्वजारोहण के बाद संगरूर के लिए रवाना हुए । बीचमें पंजाब का जनजीवन, चांवलकी मिलें, गेंहु की फसल देखने को मिली । संगरूर स्थित गुरुद्वारा नानकाजी साहबमें सबने माथा टेका । गुरुबानी सुनी

वहांके प्रमुखश्री ने भारत से आये सब प्रतिनिधियों का केसरी रंग के उपरने से सन्मान किया और गुरुद्वारे में भोजन लिया । बादमें सुनाम में शहीद उधमसिंह स्टेडियममें समाधि स्थलपर फूल चढाये । बाद मे ग्रुप फोटो लिया गया । वहां से रैली स्वरूप में सुनाम में घूमे और शहीद उधमसिंह के पुस्तेनी घर भी गये । रात्री को मनोरंजन कार्यक्रम के बाद घर लौटे ।

चौथे दिन ध्वजारोहण खेल प्रवृत्तियां, लंच के बाद बच्चोंने 'मेरे स्वप्नो का भारत कैसा होगा, मैं देश के लिए क्या कर सकती हूं। क्या कर सकता हूं' इसके बारे मे 31 बच्चोंने अपने विचार प्रगट किए । संस्कार कार्यक्रम प्रार्थना के बाद भाईजी ने गरीबी, बेकारी, भ्रष्टाचारी और व्यसनों से भारत को कैसे मुक्त कर सके उसके बारे में अपने विचार बच्चों के सामने रखे । शिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम में आज श्री हर्षदभाइ ने औरो गामी में सात प्रकार की टोपिंया, पंछी और नाव सिखाई । रात्री हररोज खेलोंका प्रशिक्षण और मूल्यांकन सभा होती थी ।

पांचवे दिन ध्वजारोहण के बाद खेल प्रवृत्तियां हुई । लंच के बाद समापन समारंभ में बच्चों को प्रमाण पत्र दिये गऐ । प्रांतवार फोटो निकाली गईं । आभार प्रदर्शन किया गया । श्री भाईजी ने कंवलजीतजी का राष्ट्रध्वज अर्पित करके सन्मान किया । मेहमानों को गीफ्ट हेम्पर देकर सन्मान किया । कार्यक्रम को सफल बनाने मे सीबा स्कूल के ड्राइवरों का, सफाइ कर्मीओं का, रसोई बनाने वाले स्टाफ का और कर्मचारी गण का सन्मान और आभार प्रगट किया गया । सभास्थल से सब ध्वजारोहण मैदान में इकट्ठे हुए । राष्ट्रध्वज संमान के साथ नीचे उतारा गया । राष्ट्रगीत के बाद बाल महोत्सव को संपन्न जाहिर किया गया।

बाल महोत्सव में सीबा स्कूल के विद्यार्थी और शिक्षकोंने मिलकर, पूरी व्यवस्था संभाली थी । बच्चों ने रैली के लिये. 600 मास्क बनाये थे । बच्चों ने प्रसार प्रचार हेतु जो टीमे बनायी थीं । उन्होंने 20 लोगों का संपर्क किया था । सबने मिलकर मेले को सफल बनाया । पांच दिन कहां गये इसका पता ही नहीं चला । बाल महोत्सव सही अर्थमें सफल हुआ ।

– आभार सह : *हर्षद रावल*
e-mail:harshadraval70@gmail.com
च.8141973341

पंढरपुर सत्याग्रह एवं यदुनाथ थत्ते स्मृति समारोह

१० मई २०१५

इसबार आसाम में, विशेष आयोजन

आयोजक

श्री हरीश भट्ट

कोकिला विकास आश्रम

ग्रा.पो.सोनपुर वाया-गोहपुर -784168,
जि. सोनपुर (आसाम)
harishbhatt132@gmail.com
mo. 09435563879 / 09435183391

अभी से इसे नोट कर समय पर रेल आरक्षण कर लें देश के किसी भी कोने से सिलीगुडी पहुंचें. एक दिन में दार्जीलिंग देखें और सिलीगुडी से गोहपुर के लिए रेल है. गोहपुर से आयोजक आपको ले जाएंगे.

इसी निमित्त उत्तर पूर्वी भारत देखना हो तो 7 दिन अतिरिक्त देकर प्रवास, निवास, भोजन खर्च के लिए रु. 7000 लगेंगे, गोहपुर तक का तथा वापसी का रेल खर्च स्वयं करना होगा. केवल 25 लोगों की व्यवस्था हो सकेगी उ.पू.भारत दर्शन के लिए. अतः रू. 7000 भेजकर आरक्षण करवाएं **मार्च 2015** तक.

: यात्रा संयोजक :

हर्षद भाई रावल 08141973341